योगी का अप्रतिम उदाहरण ...!!!

-ब्र.कु. जगदीशचंद्र हसीजा

एक बात हमने साकार बाबा के जीवन में देखी, उनका योग नैचुरल (स्वाभाविक) बन गया था। केवल ऐसा नहीं जब पालथी मारकर बैठे, लाल लाइट जलाकर रखे, कोई विशेष गीत बजे और तब योग लगे। एक बार जयपुर से एक मंत्री आये हुए थे। जिनका नाम हरिभाऊ उपाध्याय था। उन्होंने संस्था के बारे में बहुत कुछ गलत सुना था। लेकिन उनको नहीं लगता था कि संस्था ऐसी है। क्योंकि जब वह बहनों के सम्पर्क में आते थे तो वह समझते थे कि बहनें बहुत अच्छी हैं। इनको शिक्षा देने वाले भी होंगे, वे इनसे भी अच्छे होंगे। लोग जो गलत बातें करते थे उन्हें वो नहीं मानते थे। फिर भी वह स्वयं देखना चाहते थे। पहले वो शिक्षा मंत्री थे। उससे पहले अजमेर के मुख्यमंत्री थे। राजस्थान तो बाद में बना। जब वो आये तो बाबा से मिले। वो कम आयु वाले थे और बाबा तो उनसे ज़्यादा आयु वाले थे। बाबा एकदम सीधे बैठे थे। उस बेचारे की तो कमर और गर्दन भी थोड़ी झुकी हुई थी। उनको शर्म आ रही थी कि देखो बाबा कितने सीधे बैठे हैं! जिसने साधना न की वो ऐसा बैठ सकता! उन्होंने समझा की इस व्यक्ति ने बहुत साधना की हुई है। क्यों ये सीधा बैठते हैं? क्योंकि ये साधना करते हैं। इनकी आंखें भी स्थिर हैं।

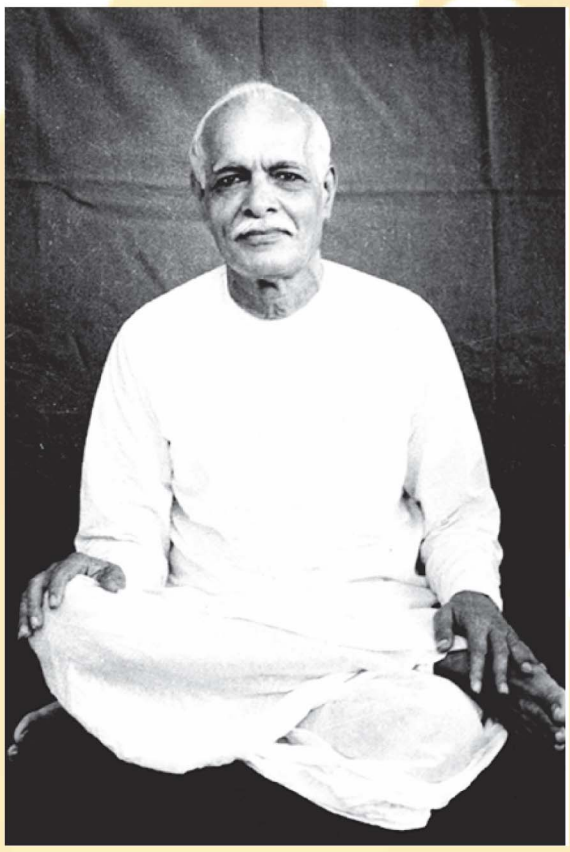

योग में योगी की आंखें स्थिर रहती हैं

जो व्यक्ति योग में स्थिर नहीं होता उसकी आंखें इधर-उधर जाती हैं, जैसे कुछ ढूँढ़ रहा हो। लेकिन जिसका योग स्थिर होता है और आनन्द आ रहा होता है तो उसकी आँखें स्थिर होती हैं। यह मेरा अपना अनुभव है। बाबा ने यज्ञ में कई कार्यों में मुझे निमित्त बनाया, वे सहज हो गये, हल हो गये। एक बार कहीं अधिकारी से मिलने गया, वो उस समय और किसी से मिल रहा था। मैं बैठा रहा। मेरे सामने मैगज़ीन, अखबार आदि रखे हुए थे, और जो लोग वहां बैठे थे, वे उन्हें उठा-उठाकर पढ़ रहे थे। मैंने नहीं पढ़ा। कुछ भी नहीं पढ़ा। जैसे जाकर बैठा वैसे ही बैठा रहा। आँखें स्थिर थी, बाबा की याद में बैठ गया। मैंने सोचा क्यों न कमाई करूँ। क्यों ये पढ़कर समय व्यर्थ गंवाऊं? वो व्यक्ति बीच-बीच में बाहर देखता था। बहुत से धार्मिक संस्थानों का वो ट्रस्टी था। बीच-बीच में वो मुझे भी देख रहा था। उसने देखा कि इसकी आंखें बहुत स्थिर हैं और इसने मुड़कर इधर-उधर के नज़ारे देखे ही नहीं। जब मैं उससे मिला तो कहता है कि आप क्या योग लगाते हैं? मैंने कहा जी! आपको कैसे मालूम पड़ा? कहता है, आपसे वायब्रेशन आ रहे थे। और लोगों से तो और तरह के वायब्रेशन आ रहे थे। आपके वायब्रेशन अच्छे थे और आपके नेत्र स्थिर थे। लौकिक में एक विशेष प्रकार का अभ्यास कराते हैं जिसको त्राटक योग कहते हैं। त्राटक में साधक आँखों को स्थिर करते हैं। उनको यह तो मालूम नहीं है कि आँखों को कहा स्थिर करना चाहिए। वो एक सर्कल बनाते हैं, उस सर्कल के अन्दर एक और सर्कल बनाते हैं, उसके अन्दर और एक, और लास्ट में एक बिन्दु बनाते हैं, उस पर आँखें स्थिर करते हैं। क्यों ऐसे करते हैं, मालूम नहीं है। वे कहते हैं, पहले बाहर के सर्कल तक देखने का अभ्यास करो, उस सर्कल के बाहर इधर-उधर मत देखना। इसी तरह से त्राटक करो, आँखें जमाये रखो। उनके अनुयायी ऐसे ही करते हैं। उसके बाद पूंछते हैं वो कर लिया? फिर बताया जाता है कि उस सर्कल को भी मत देखो। कराते-कराते अन्त में कहते हैं कि किसी भी सर्कल को मत देखो, एक बिन्दु को ही देखो। यह एकाग्रता है। बिन्दु को ही क्यों देखना है? यह उनको मालूम नहीं, बाबा का ज्ञान मिलने के बाद यह स्पष्ट होता है कि सर्कल माना यह विश्व, इसको न देखो, देखते हुए भी न देखो।

योगी जो होता है वह देखते हुए भी नहीं देखता। जिस चीज़ से हमारा कोई लेना-देना नहीं, कोई मतलब नहीं उसको क्यों देखना है? अत: योगी देखते हुए भी नहीं देखता है।

गृहस्थी बाज़ार में जाता है तो हरेक दुकान में जाकर झांककर देखता है। अरे भाई तुम्हें लेना क्या है? तुम्हें कपड़ा लेना है न। कपड़े की दुकान में जाकर देखो। दूसरी चीज़ की दुकान में जाकर क्यों देखते हो? योगी अपने स्थान पर जाता है। उसकी थिंकिंग स्ट्रेट लाइन है। उसकी यात्रा मंज़िल की तरफ ही जाती है। दुनिया को भूलकर अपने जो लौकिक सम्बन्ध हैं, शरीर है, उस सर्कल को भी मत देखो। देखते हुए भी न देखो। भूल जाओ। समझो कि मैं मर गया हूँ। अब मेरा नया जन्म हुआ है, पुरानी बातों को क्यों याद करना!

कुछ लोग कहते हैं कि यह जगत स्वप्न की तरह है। जगत स्वप्न की तरह नहीं है बल्कि अभी तक जो आपके सम्बन्धी थे, स्नेही थे, वे आपको अभी स्वप्न जैसे लग रहे हैं, जैसेकि स्वप्न में कोई चीज़ देखी जाती है – भाव तो यह है लेकिन कहते हैं, जगत ही एक स्वप्न जैसा है। हे राम जी यह जगत बना ही नहीं है। योग वशिष्ठ में मुनि वशिष्ठ जी श्रीराम को कहते हैं कि हे राम, यह जगत बना ही नहीं है। बना ही नहीं है तो स्वप्न किसको कह रहे हो? क्यों कह रहे हो? बना है तब तो बात कर रहे हैं।

बाबा का स्वाभाविक योग था

यहां मैं अपने आदि पिता ब्रह्मा बाबा की बातें सुनाना चाहता हूँ। एक बार जब कानपुर या लखनऊ वाले आये थे, बाबा पालथी मारकर एकदम सीधे बैठे हुए थे। चेहरे पर बड़ी कांति थी, रौनक थी। कोई कह नहीं सकता था कि यह बूढ़े हैं। अच्छा अगर बूढ़े भी हैं तो एकदम एलर्ट, एक्टिव, इलास्टिक हैं–यह देखने में आता था कि उस समय बाबा ने पालथी मारी हुई थी, योग लगा रहे थे। लेकिन बीच-बीच में बाबा पांव हिला रहे थे। बाबा पांव योग में हमेशा नहीं हिलाते थे, कभी-कभी हिलाते थे। फिर छोड़ देते थे, फिर हिलाते थे, फिर शान्त और स्थिर। उस समय हमें दिखाई पड़ता था कि उनकी आँखों से ज्वाला निकल रही है। अगर आप भी उस तरफ देखते तो आपकी भी अन्तर्मन की ज्वाला जग गयी होती। बाबा का इतना पावरफुल योग होता था। बीच-बीच में बाबा यदा-कदा टाँग को हिला देते थे। उस ग्रुप में एक प्रोफेसर था जिसने धार्मिक साहित्य का अध्ययन किया हुआ था। वह मुझसे कहने लगा, जगदीश भाई, मुझे एक बात समझ नहीं आई, योग में स्थिर बैठा जाता है, आपके बाबा टाँग क्यों हिला रहे हैं? मैंने कहा भाई मैंने तो कभी पूछने की हिम्मत नहीं की। मैं इतना जानता हूँ कि उनका योग स्वाभाविक है। गीता में भी है कि योग में रहकर कर्म करो। ये कर्म भी करते हैं और योगी की जो नैचुरल स्टेज (स्वाभाविक स्थिति) होती है – मैं आत्मा हूं, मैं परमधाम से आया हूं, मैं लाइट हूं, मैं माइट हूं, मैं ज्योति बिन्दु हूं– इसमें स्थिर भी रहते हैं। हम लोग तो जपते रहते हैं, रटते रहते हैं और स्थिर होने की कोशिश करते रहते हैं लेकिन बाबा में यह नैचुरल रूप में था।

योग को अपना नैचुरल जीवन बनाओ

'योगी' शब्द वहाँ सार्थक है, उस व्यक्ति पर लागू होता है जो सदा योग में स्थिर रहता है, जिसका योग नैचुरल है। बात कर रहे हैं या बात सुन रहे हैं, बात करते-करते, बात सुनते-सुनते हमारा योग टूट गया तो हमारा योग कच्चा है। वो योग नहीं है। हम जो भट्ठी करते हैं इसका एक लाभ यह भी होना चाहिए कि भट्ठी के बाद अपने-अपने स्थान पर जाकर यह देखो कि जब मैं भट्ठी में था उस समय जो मेरी स्टेज थी, जो - शेष पेज 7 पर...

भुवनेश्वर-ओडिशा। भारत के राष्ट्रपति महामहिम प्रणब मुखर्जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.लीना। साथ हैं ब्र.कु.विजया, तपस्वनी बहन, बिनि बहन तथा अन्य।

रत्न नगर-नेपाल। महाशिवरात्रि के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि राष्ट्र प्राकृतिक संरक्षण कोष के अध्यक्ष शंकर चौधरी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शर्मिला। साथ हैं अन्य गणमान्य जन।

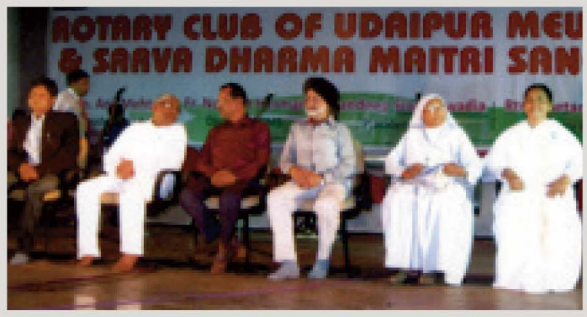

उदयपुर-राज.। रोट्री क्लब व आयोजित सर्व धर्म मैत्री संघ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु.रीटा,आशाधाम की डायरेक्टर सिस्टर डेनियल, सिक्ख धर्म गुरुद्वारा अध्यक्ष पाजी, ईसाई धर्म के बिशप फादर देव एवं हिन्दू धर्म के राष्ट्रीय कवि अजात शत्रु व अन्य।

कुश्मा-नेपाल। उप-प्रधान एवं स्थानीय विकास मंत्री प्रकाशमान सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.राधिका।

राजसमंद-राज.। 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन' विषयक कार्यक्रम के पश्चात् ब्र.कु. अशोक गावा व तहसीलदार हसमुख कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पूनम।

सिकन्दरा-आगरा। महाशिवरात्री के उपलक्ष में निकाली गई रैली में सम्मिलित भाई बहनें।